IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, May 2026
Impact Factor: 8.2

भारतीय कला में बोधगया का शिल्पांकन

डॉ. प्रदीप सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
टी. डी. पी. जी. कालेज, जौनपुर (उ0प्र0)

बिहार राज्य के अन्तर्गत गया जनपद से छः मील की दूरी पर उरूबिल्व नामक ग्राम के निकट एक पीपल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध को संबोधि की प्राप्ति हुई थी। इसकी स्मृति में सम्राट अशोक ने संबोधि स्थल पर एक बोधिगृह का निर्माण कराया था। जिसके चतुर्दिक ईंटो की एक वेदिका निर्मित की गई थी। शुंग काल में ईंटों के स्थान पर पत्थरों का प्रयोग किया जिसमें भरहुत और सांची के सदृश स्तम्भ सूची एवं उष्णीष का निर्माण किया गया। यद्यपि यह वेदिका पूर्णतः विनष्ट हो चुकी है परन्तु अधिकांश स्तम्भ एवं सूचियों के ध्वांसावशेष द्वारा इनकी कला का अवलोकन किया जा सकता है। वर्तमान समय में बोधगया के महाबोधि मंदिर की ग्यारहवीं शताब्दी में बर्मियों ने मरम्मत कराकर भव्य स्वरूप प्रदान किया था। चीनी यात्री हवेनसांग ने 647 ई० में इसे जिस रूप में देखा था उसका कुछ अंश व अवशिष्ट आज भी विद्यमान है। हवेनसाँग के अनुसार लगभग 160–170 फुट ऊँचा तथा 50 फुट चौड़ा ईंट द्वारा निर्मित इस बिहार पर प्लास्टर एवं बुद्ध की स्वर्ण मूर्तियों बिहार की रथिकाओं की पंक्तियां सुसज्जित थी।[1] जिससे प्रतीत होता है कि मंदिर का आधुनिक स्वरूप बहुत बाद का है परन्तु बोधगया मंदिर का अधिकांश भाग शुंग कालीन कला का परिचायक है। मंदिर के एक अहिच्छत्र पर राजा इन्द्र–मित्र और ब्रह्ममित्र की रानियों का नाम उत्कीर्ण है। इनका समय ई०पू० प्रथम शती है तथा ये राजा शुंग राज्य के अधीन सामंत शासक थे। अधिकांश विचारकों का मत है कि बोधगया के रेलिंग पर अंकित अधिकांश दृश्य सांची के पूर्व तथा भरहुत के बाद के प्रतीत होते हैं, जो सम्भवतः प्रथम शती के पूर्वार्द्ध में निर्मित हुए होगे। कनिंघम महोदय का कथन है कि वर्तमान बोधगया मंदिर और उसका शिखर कुषाण कालीन है। उनके मत का प्रमुख आधार कुषाण कालीन सम्राट हुविष्क एक सिक्का है जो मंदिर के वज्रासन के निकट प्राप्त हुआ है। फाहियान को मतानुसार बुद्ध के जन्म स्थान, बोधिवृक्ष सारनाथ एवं कुशीनारा में मंदिर थे परन्तु इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि बोधगया में शिखर युक्त मंदिर था। कुम्हरार के उत्खनन में प्राप्त मिट्टी की चौखट पर बोधगया मंदिर को चित्रांकन के आधार पर स्पूनर महोदय ने इसकी तिथि दूसरी या तीसरी शती घोषित किया है परन्तु बरुआ महोदय ने अस्वीकार करते हुए इस चित्र को विश्वसनीय नहीं माना है।[2] बोधगया की वेदिका वृक्ष, वज्रासन एवं चक्रमपथ को घेरे हुए है। इसकी परिधि के बाहर छोटे–छोटे स्तूप है। पूर्वी दिशा में तोरण है परन्तु वेष्टिनी का भाग उत्तर–पश्चिम में शेष है। वेष्टिनी पर उत्कीर्ण प्रतीकों एवं कथानकों से स्पष्ट है कि इसका निर्माण हीनयान युग में हुआ। जिसका आधार ई०पू० शती में निर्मित वेदिकाओं की प्रमुख विशेषता उनकी प्रतीकात्मकता है।

बोधगया मंदिर की वेष्टन–वेदिकाओं पर उत्कीर्ण शिल्पांकन –

शुंगयुगीन कला की दृष्टि से बोधगया मंदिर की वेष्टन–वेदिकाओं पर उत्कीर्ण चित्रांकन अति महत्वपूर्ण है। भरहुत वेदिका अलंकरण की अपेक्षा बोधगया का भी कला उच्चतर है। कलाकार की लिए यद्यपि मूर्ति उकेरने के लिए स्थान कम है

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-35518

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, May 2026 Impact Factor: 8.2

तथादि भरहुत की भांति बोधगया की कला बोझिल नहीं है। कलाकारों ने स्थान कम होने पर भी थोड़ी सी सीमा में आकृति को सुन्दरतम ढंग से प्रस्तुत किया है। जिसका प्रदर्शन भाररहित गोलाकार स्वरूप में उभरकर जीवन्त हो गया है। यहाँ की कला में उत्कीर्ण में आकृतियों की ग्रंथियों में प्रवाहपूर्ण गति का संचार परिलक्षित होता है। भरहुत की अपेक्षा बोधगया की कला को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। यहाँ की वेदिका पर निम्नप्रकार के दृश्यांकन मिलते हैं।

बुद्ध के जीवन से सम्बंधित घटनाओं एवं जातक कथाओं का दृश्यांकन–

मानव रूप में भगवान गौतम बुद्ध को प्रतिमा निर्माण के पूर्व हीन यानी कलाकारों ने उनके जीवन की घटनाओं को अनेक प्रकार से प्रदर्शित किया है जिसमें बुद्ध को प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उनके जन्म को 'गज' के प्रतीक रूप में स्वीकार किया गया था। बोधगया में प्रदर्शित भगवान बुद्ध के जन्म के दृश्यांकन में मायादेवी को शैय्या पर सोये हुए प्रदर्शित किया गया है तथा शैय्या को उपरी भाग में हाथी का चित्रांकन उत्कीर्ण है। बोधिवृक्ष की स्तूप के अवशेष है जिसका निर्माण सम्राट अशोक के समय में किया गया है। सुजाता द्वारा तपस्वी गौतम को खीर प्रदान करना, निरंजना नदी को पारकर वृक्ष के समीप बैठना, मार की कन्या तथा सैनिकों का आक्रमण आदि की सभी घटनाएं बोधिवृक्ष के समीप की है परंतु इसका प्रदर्शन नहीं किया गया है। बुद्ध को महापरिनिर्वाण स्तूप का दृश्यांकन अनेक स्थलों पर किया गया है, जिसमें मानव एवं पशु–पक्षियों आदि द्वारा उसकी पूजा करते हुए प्रदर्शित किया गया है। अन्य प्रमुख घटनाओं के अन्तर्गत नाला–हस्तिदमन, जेतवन विहार तथा वैशाली के महाप्रदर्शन आदि का दृश्यांकन बोधगया की वेष्टिनी पर उत्कृष्ट रूप में प्रदर्शित किया गया है। नालाहस्ति– दमन की दृश्यांकित कथानक में देवदत्त द्वारा संघ का नेता बनने की इच्छा को बुद्ध द्वारा अस्वीकार करने पर देवदत्त ने प्रतिशोध एवं ईर्ष्यावश भगवान बुद्ध के उपर एक दिन विशाल चट्टान फेंक दिया और बुद्ध को मारने हेतु एक मतवाले गज को उनके सम्मुख छोड़ दिया। परन्तु वह हाथी बुद्ध के सन्मुख पहुंचने पर उनकी दिव्य आभा से सम्मोहित होकर स्थिर चित्त होकर शान्त हो गया। भगवान बुद्ध ने जैसे ही उसके सूढ़ को स्पर्श किया वैसे ही उस हाथी ने उनके रज को सूढ़ से उठाकर अपने मस्तक पर लगा लिया। यह अद्भुत घटना भगवान बुद्ध को अलौकिक तेज का प्रतीक है। इस घटना का सुन्दर दृश्यांकन बोधगया की वेष्टिनी पर किया गया है। अनाथ–पिंडक द्वारा जेतवन बिहार खरीदने का दृश्यांकन भरहुत की अपेक्षा संक्षिप्त रूप में प्रदर्शित किया गया है।[3] जिससे ज्ञात होता है कि बोधगया की वेष्ठिनी वेदिकाओं के निर्माण के समय तक जन–साधारण बुद्ध की प्रचलित कथाओं से परिचित हो चुके थे। जिसके फलस्वरूप भरहुत की भांति इसे विस्तार देने की आश्यकता नहीं रह गयी थी।[4] वज्जि लोगों के आग्रह पर वैशाली में भगवान बुद्ध ने एक ही क्षण में सहस्रों बुद्धों का प्राकट्य कर अद्भुत चमत्कार का प्रदर्शन किया था जो बौद्ध परम्परा में महाप्रदर्शन के नाम से विख्यात है। महाप्रदर्शन का यह दृश्यांकन बोधगया में प्रदर्शित किया गया है। भगवान बुद्ध के अन्य प्रतीकों के अन्तर्गत वज्रासन, पद्चिन्ह, चंक्रमपथ और चूड़ा की पूजा का प्रदर्शन बोधगया की वेष्टिनी पर प्रदर्शित किया गया है। बोधगया में महापरिनिर्वाण स्थल पर बोधि वृक्ष के नीचे बोधिसत्व को सम्बोधि की प्राप्ति हुई थी। जातक कथाओं में भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म की 550 कथाओं का वर्णन मिलता है। जिससे प्रेरित होकर शिल्पकारों में बोधगया की वेष्ठिनी पर जातक कथाओं का चित्रांकन किया है। जिसमें वेसेन्तर जातक, षडदंत जातक तथा महाकवि जातक प्रमुख है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, May 2026 Impact Factor: 8.2

देवी देवताओं का अंकन –

बोधगया की वेष्टिनी पर भगवान सूर्य का चित्रांकन किया गया है।[5] जिसमें एक चक्र वाले रथ पर भगवान सूर्य सवार हैं। जिसे चार घोड़े खींच रहे है। भगवान सूर्य के हाथ में घोड़ों की राशि सुशोभित है। उसके दोनों तरफ एक एक धनुषबाणधारी स्त्रियों का अंकन किया गया है जिसकी पहचान ऊषा और प्रत्यूषा से की गई है। इस शिल्पांकन में कलाकार ने भवभि–व्यक्ति में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त की है। घोड़ो के शिल्पांकन में उसके पैरों की उठती टापों और मुद्रा में अविराम गति, स्फूर्ति एवं शक्ति की अभिव्यक्ति सुंदरतम रूप में की गयी है। बौद्ध मंदिर में भगवान सूर्य का अंकन शुंगयुगीन धार्मिक सहिष्णुता का परिचायक है। शुंग शासक पुष्यमित्र शुंग ब्राहमण मतावलम्बी शासक था जिसने वैदिक यज्ञों के माध्यम से ब्राह्मण धर्म का पुनः उत्थान किया था। जिससे प्रतीत होता है कि ब्राह्मण धर्म का व्यापक प्रभाव पाटलिपुत्र के निकट बोधगया पर भी पड़ा। जिसके फलस्वरूप बोधगया की वेष्टिनी पर वैदिक देवता सूर्य का चित्रांकन किया गया।

बोधगया वेष्टिनी –

वेदिका का सर्वाधिक विलक्षण दृश्य बारह राशि चिन्हों का दृश्यांकन है जिसे प्रमुख स्थान प्रदान किया गया है। इन राशियों की आकृतियों का अंकन ज्योतिष के आधार किया गया है जिसे देखकर लोगों में उस राशि का भाव प्रकट हो सके।[6] इन राशियों के आकृतियों के नीचे यद्यपि लेख का अंकन नहीं है तथापि रूप–चित्रों को देखकर उसका अभिज्ञान आसानी से सम्भव है। जैसे पुष्पाहार नवयौवना की आकृति के अंकन से कन्या राशि, पीठिका पर आसीन मानव आकृति से तुला, मृग शरीर वाले धनुर्धारी से धनुराशि तथा प्रणयरत स्त्री–पुरुष को चित्रांकन से मिथुन राशि का ज्ञान प्राप्त होता है। बोधगया की प्रस्तर वेदिका पर श्री माँ देवी का भी चित्रांकन किया गया है। विद्वानों ने प्रारम्भ में श्री माँ देवी की पहचान माया देवी के रूप में की थी। इस चित्रांकन में बाएं हाथ में कमल पुष्प लिए देवी के दोनों पैर एक दूसरे से जुटे हुए तथा जमीन से ऊपर उठा हुआ प्रदर्शित है। इसी प्रकार गज–लक्ष्मी की आकृति वाली मूर्ति का अंकन किया गया है जिसमें देवी को गजों द्वारा अभिषेक कराते हुए प्रदर्शित किया गया है।

शाल–भंजिका एवं पुष्प भंजिका–नारियों का अंकन–

भरहुत स्तूप की वेदिकाओं पर उत्कीर्ण शाल–भंजिका मूर्तियों की भांति बोधगया के वेदिका स्तम्भों पर नारी–मूर्तियों का उत्कीर्णन किया गया है। वासुदेव शरण अग्रवाल ने बुद्ध के समय शाल–भंजिका नामक त्योहार मनाने को अनेक दृष्टान्त प्रस्तुत किया है।[7] शाल–भंजिका नामक त्योहार का अनेक दृष्टान्त एवं विवरण प्राप्त होता है।[8] शाल–भंजिका का शाब्दिक अर्थ है– शाल–पुष्प को तोड़ना। पाणिनि के मतानुसार प्राचीन भारत में इस प्रकार का उत्सव प्रचालित था। बोगेल का कथन है कि शाल–भंजिका का उत्सव मगध और उसके समीपवर्ती भाग में विशेष रूप से मनाया जाता था।[9] बौद्ध ग्रंथों में इस उत्सव का वर्णन मिलता है।[10] जातक निदान कथा में वर्णित है कि जिस समय लुम्बनी वन में शाल वृक्ष फूलों से लद गये थे उस समय बुद्ध की माता मायादेवी वन में केलि करने की इच्छा से परिचारिकाओं के साथ गयी थी।[11] अवदान जातक में वर्णित है कि श्रावस्ती में जिस समय बुद्ध ठहरे हुए थे उस समय शाल–भंजिका उत्सव में हजारों लोग एकत्र हुए थे जिसमें लोगों द्वारा क्रीड़ा करने के फलस्वरूप पुष्पों का विशाल देर लग गया था।[12] बोधगया की वेदिका पर इसके चित्रांकन में नारी के कमनीय, आकर्षक एवं उत्तेजक रूप का स्वाभाविक प्रदर्शन किया गया है। वृक्ष की डाल पकड़े हुए नारी के चित्रांकन में प्रकृति और स्वस्थ सुन्दर

नारी का सहचर्य परिलक्षित होता है। अग्रवाल महोदय ने वोगेल के विचारों के आधार पर लिखा है कि वृक्षों से क्रीड़ा करती हुई उद्धृत नारियों की आकृतियो बौद्ध साहित्य में वर्णित शाल–भंजिका उत्सव से मिलती जुलती है। मगध और उसके पड़ोसी प्रान्त जो बौद्ध धर्म क्रीड़ा स्थल थे इन उत्सवों का जन्म स्थान रहे होगे।[13] बोधगया की रेलिंग पर शाल–भंजिका दृश्यांकन में नारियों की आकृतियां यथार्थ रूप में न होकर लावण्य की आदर्श प्रतिकृति रूप में प्रदर्शित हैं। नारी आकृतियों में सरस प्रवाहमयी भाव–भंगिमाओं के साथ अंग–प्रत्यंग की कमनीय सुन्दरता सुशोभित है। आध्यात्मिक रहस्य से अभिप्रेरित इन मूर्तियों में जीवन के उल्लासमय पक्ष का सफल चित्रांकन किया गया है। हेवेल महोदय के लिखा है कि इसमें जिस ताजगी, कोमलता, शिल्प चातुर्य और अलंकृत सौजन्य की अभिव्यंजना हुई है वह पाश्चात्य कला में असम्भव है।[14]

प्रणय बद्ध मिथुन आकृतियों का अंकन–

बोधगया की रेलिंग पर शिल्पकारों ने वास्तविक जीवन से सम्बधित प्रणयबद्ध प्रेमी युगल की आकृतियों का चित्रांकन किया है जो जीवन के सौन्दर्य एवं उल्लासमय पक्ष को मूर्तरूप प्रदान करता है। आंलिगन बद्ध स्त्री एवं पुरुषों की आकृतियों में गतिमय चपलता एवं मादकता का अंकन हुआ है। यद्यपि भरहुत की कला में भी आलिंगन स्त्री एवं पुरुषों का उत्कीर्णन मिलता है तथापि उसकी अपेक्षा बोधगया में उसका अंकन अधिक परिपक्व रूप में हुआ है।[15] इन मूर्तियों के अंकन में पूर्ण समर्पण एवं अन्योन्याश्रय के भावांकन में शिल्पकार की जागरुकता दृष्टव्य है। जो प्रगतिशील मानसिकता का परिचायक है। वस्तुतः बोधगया के शिल्पकार ने भरहुत की अपेक्षा प्रगतिशील कदम उठाते हुए सर्वोच्च कला का प्रदर्शन किया है। युगल आकृतियों के अंकन में प्रत्येक अंग के स्फुरित होने का आभास जीवन्त रूप में प्रस्तुत करना शिल्पकार की हस्तकला का प्रमाण है जो इसे कालजयी बना देता है।

संदर्भ सूची

1. ब्ददपदहींउए ।ए डींइवकीप वत जीम हतमंज ठनककपेज जमउचसम ंज ठनककींहंलंए च्ण 18
2. श्रवनतदंस व िजीम ठपींत ंदक व्तपें त्मेमंतबी ैवबपमजलए प्ग्ए च्च्ण 375 ॰॰
3. ठंतअंए ठण्डण्ए ळंलं ंदक ठनककीं ळंलंए थ्पहए 54
4. ज्ञतंउतपेबीए ैए प्दकपंद ैबनसचजनतमए थ्पहए 16ए 17ए 19ए 20
5. डंतेींससए श्रए श्रवनतदंस व िजीम त्वलंस ।पवजपब ैवबपमजलए 1908ए च्च्ण 1096.97ए च्सए प्टए थ्पहए 3ए डपजतंए त्ंरमदकतं स्ंसंए ठवकी.ळंलंए च्स्ए स्ए ब्ववउंतं ैूउलए ।ण्ज्ञण भ्पेजवतल व िप्दकपंद ंदक प्दकवदमेपंद ।तजए च्ण 67ए थ्पहए 61
6. ठंतूंए ठण्डण ळंलं ंदक ठनककींए टवसण स्प्ए च्ण 63
7. ।हतूंसए टण्ैण्ए प्दकपं ेंदवूद जव च्ंदपदपए च्ण 159
8. जीम ूवउमद ंदक जतमम वत ैनसं ईींदपरपां पद प्दकपंद सपजमतंजनतम ंदक ।तजए ।बजे व्तपमदजंसपंए ट
9. जातक, 1, पृ0 52
10. वही
11. जातक, 1, पृ0 52

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, May 2026
Impact Factor: 8.2

12. ।बजं व्तपमदजंसपंए टप्पए च्च 201

13. ।हतूंसंए टपैण्ए प्दकपं ेंदवूद जव चंदपदपए च्च 159

14. ।तबींमवसवहपबंस ैनतवमल व िप्दकपं ।ददनंस त्मचवतजेए 1922.23ए च्च 164

15. डॉ0 श्रीवास्तव बृजभूषण, प्राचीन भारतीय प्रतिमा–विज्ञान एवं मूर्ति–कला, पृ0 297

DOI: 10.48175/IJARSCT-35518